**परिचय –** भौतिक संस्कृति और एक देशज समुदाय के साथ उसके सांस्कृतिक सम्बध्द का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण न केवल उस कलाकृति के अंतभूत मूल्यों के कारण ही नही, अपितु अविष्कार के स्रोत और ज्ञान के प्रसार के लिये भी है। इसके कलाकृति के निर्माण में प्रयुक्त तकनीक की भूमिका जनजातीय समुदाय के सम्पूर्ण आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन से सम्बंद्व होने के विशिष्ट गुण के कारण अत्याधिक है। प्रादर्श के बारे में जानकारी संस्कृति के भैतिक लक्षणों, उद्भव, वितरण, पर्यावरण अनुकूलन उवम् प्रसार इत्यादि को समझने में सहायक होती है। यह आन्ध्रप्रदेश के विशाखापंट्टनम जिला स्थित अराकू घाटी के कोंध जनजातीय ग्राम बोंडमगुड़ा से संकलित लकड़ी की पारम्परिक चक्की का एक रूप है। लकड़ी की यह भव्य परम्परा अराकू घाटी में कोंध जनजाती के भौतिक जीवन की पूर्ण छवि प्रस्तुत करती है, चक्की दो समान भागों में विभक्त है-एक आधार के स्प में और दूसरा पेशीय शक्ति से घुमा कर अनाज पीसने हेतु इस्तेमाल किया जाता है। प्रादर्श की कार्यशैली खास तौर से उपयोगिता वादी है जो केवल शिल्प परम्परा ही नही बल्कि समकालीन संस्कृति जिसमे वे विकसित हुए है, को भी प्रदर्शित करती है। प्रादर्श की सहज प्रतीकात्मकता समाज, समुदाय और संस्कृति की अभिव्यक्ति है।

# जतंगा
# Jatanga

अराकू घाटी, आन्ध्र प्रदेश से लकड़ी की एक पारम्परिक चक्की

**A traditional wooden grinder from Araku Valley, Andhra Pradesh**

Users: **Khond Tribal Community**
**Purpose: Domestic use for grinding millets, cereals, pulses and grains.**
Method of use: **Manual hand operation in sitting posture on floor both single and double operated by women.**
Component Parts: **Two parts 1) Upper (rotating body) and 2) Lower (Static body); round shape medium weight wooden parts.**
Constituent Materials: **Wood locally known as Billakarra *(Chloroxylon swetaenia)***

आकृति – बेलनाकार, लम्बाई/ऊँचाई– 72 से. मी. व व्यास– 127 से. मी.
Shape – Cylindrical, Length/Height - 72 c.m., Diameter- 127 c.m

समुदाय / Community:
कोंध जनजाति/ Khond Tribe

संकलन स्थान/ Place of collection :
अराकू घाटी, आन्ध्र प्रदेश
Araku Valley of Eastern Ghats in Andhra Pradesh

आरोहण क्रमांक/Accession No.:
**2005-1381**

**INTRODUCTION -** **The study of material culture and their cultural association with an ethnic group have great importance, not only from the intrinsic values of the artefact itself, but also for the source of invention and knowledge of diffusion. The techniques in crafting this artefact, plays an immense role by virtue of its relation to the economic, social and cultural organisation of the tribal community. Knowing the artefact, also helps in the understanding of material traits of culture, origin, distribution, environmental adaptation and diffusion etc. 'Jatanga' means two pieces (a pair) of wooden grinder in 'Kui' language among Khond tribes. It is a traditional form of a wooden grinder of Khond tribal village 'Bondam guda' of Araku Valley in Vishakapatnam district of Andhra Pradesh. Jatanga is one such household object that continues to sustain, since ancient times, without breaking generations. This glorious wooden tradition offers a complete picture of the material life of the Khond tribe of Araku Valley. The grinder is divided in two equal parts- one is used as strong base and other for grinding grains by rotating through muscular energy. The functional style of the object is particularly utilitarian (household), reflects not only craft tradition but also the contemporary culture in which they were developed. The simple sign of object is an expression of society, community and culture.**

# अराकू घाटी में कोंध जनजाति का नृवंशविज्ञान/ The ethnography of Khond tribe in Araku Valley

कोंध शब्द सम्भवतः द्रविड़ शब्द ''खोडा'' से लिया गया है। कोंध विशाखापट्टनम, विजियानगरम तथा श्रीकाकुलम जिलों में व्यापक रूप से फैले पहाड़ी लोग है। बोंडम गुड़ा आन्ध्रप्रदेश के पूर्वी घाट में कोंध जनजाति द्वारा निवासित एक छोटा सा गांव है। कोंध स्थानीय तौर पर कोडापे के रूप में ज्ञात स्थानांतरित कृषि, स्थायी कृषि तथा पशुपालन करते है। इसके अतिरिक्त यह समुदाय दिहाड़ी मजदूर, शिकारी और खाद्य संग्रहक भी हैं। ये मांसा हारी हैं और इनका प्रिय भोजन बाजरा, जौ, ज्वार, तथा शुष्क क्षेत्रों में पैदा होने वाले दोयम दर्जे के तृण धान्य है। बाजरा मानव जाति को ज्ञात प्राचीनतम खाद्य तथा घरेलू उपयोग में लाया जाने वाला सम्भवतः पहला अनाज है। कोंध लोगो द्वारा उगाये जाने वाला धान्यों कोदू, सामा, गंतिलु, वरिगलु, जोन्ना इत्यादि है। अधिकांशतः कोंध परिवार एकाकी होते है। आन्ध्रप्रदेश राज्य में इन्हे अनुसूचित जनजाती के रूप में मान्यता दी गयी है। इनकी पहचान वृहद् समुदाय से पृथक समुदाय के रूप में की गयी है जिनकी अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है तथा भारत सरकार द्वारा खास तौर से देशज जनजातीय समुदाय जो पहले आदिम जनजातीय समुदाय के रूप में जाना जाता था, के रूप में वर्गीरूप किये गये है।

The term 'Khond' is most probably derived from the Dravidian word Konda. The Khond are hill people largely distributed over the districts of Vishakapatnam, Vizianagaram and Srikakulam districts. 'Bondam Guda' is a small tribal village inhabited by Khond tribe in the Eastern ghats of Andhra Pradesh. The Khond practices shifting cultivation locally known as "Kondapodu", settled agriculture and animal husbandry. Besides, there are wage-earners, hunters and food gatherers among them. They are non-vegetarians and their staple food is Millet, small seeded grasses that are hardy and grow well in dry zones as rain-fed crops, under marginal conditions of soil fertility and moisture. Millets are one of the oldest foods known to human and possibly the first cereal grain to be used for domestic purposes. The type of millets cultivate by Khond tribe in this area i.e. Odalu (Barnyard millet), Korra (Foxtail millet, Chollu/ Rarulu (Finger millet), Arikelu (Kodu millet), Sama (Little millet), Gantelu (Pearl millet), Varigalu (Proso millet), Jonna (Sorghum) etc. The majority of the Khond family are nuclear type. The Khonds are designated as Scheduled Tribe in the State of Andhra Pradesh. They are identified as more isolated from the wider community and who maintain a distinct cultural identity have been categorised as Particularly Vulnerable Tribal Groups (PTGs), previously known as primitive tribal groups by the Govt. of India.

# प्रादर्श का उपयोग एवम् महत्व / Object Use and Significance

जतंगा अराकू घाटी में कोंध जनजाती द्वारा अनाज पीसने के लिये प्रयुक्त लकड़ी की पारम्परिक चक्की है। इसका प्रयोग महिलाओं द्वारा किया जाता है। परिवार द्वारा इसकी खास देखभाल की जाती है और पालतू तथा अन्य पशुओं की पहुंच से सुरक्षित रखा जाता है। दूसरी ओर यह शुचिता चक्की के स्वच्छता पूर्ण उपयोग को भी सुनिश्चित करती है। रूग्ण और बीमार लोगों द्वारा स्पर्श वर्जित होती है। गर्भावस्था के अंतिम दौर में गर्भवती महिलाओं के लिये जतंगा का उपयोग सीमित है। एक परिवार के लिये खाध्यान उत्पादन के पश्चात् सम्पूर्ण प्रक्रिया और उसको घरेलू खपत इस चक्की द्वारा संचालित होती है। इस प्रकार की लकड़ी की चक्की का प्रयोग केवल कोंध जो मूलतः इस क्षेत्र में बाजरा, जो, ज्वार की खेती करते है द्वारा किया जाता है। पूर्व में घरेलू उपयोग के ऐसे बड़े-बड़े प्रादर्श प्रचुरता से उपलब्ध थे और यह पहाड़ी जनजाति अपने स्थानीय पर्यावरण से बड़ी सरलता से संसाधन जुटा लेती थी। आजकल उनके लिये इस प्रकार की ठोस लकड़ी की चक्की हेतु लकड़ी प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया है। पहले चक्की हेतु उपयोग में लायी जाने वाली लकड़ी के टिकाउपन अधिक कारगर और दीमक विरोधी तत्व जैसे कई लाभ थे।

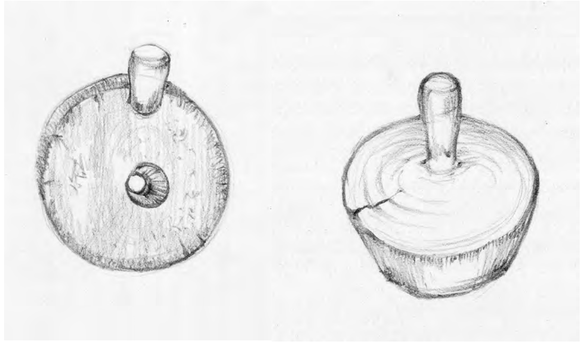

Jatanga is a traditional form of a dry wooden grinder used exclusively for grinding millets among the Khond tribal community in Araku Valley. The use of this grinder is gender specific. It is used only by the women. The object is given utmost care by the family and abstains from unwanted interventions of the pets and other animals. This sanctity, on other hand, allows the family to keep hygienic use of the grinder. Taboos are also observed during the time of grinding. People having ill ailments and diseases refrain from touching the object. The use of Jatanga is limited for the pregnant women in course of an advance stage of pregnancy. The entire mechanism of agricultural food production for a family and their domestic consumption is administered by this grinder. The object also bears the cultural identity of the tribe because wooden grinder of such kind is extensively used by the Khonds who are primarily the Millet cultivators in this region. In the early days, such massive households of domestic utility were widely available and this hill tribe could easily harness the resources from their local environment. These days, it is very difficult for them to find the wood for preparing this substantial form of wooden grinder. The wood traditionally used for preparing grinder has enormous advantages of durability, efficient grinding and also contain anti-termite elements.